रावतभाटा

परमाणु बिजलीघरों से बढ़ता स्वास्थ्य संकट

रामप्रताप गुप्ता

रावतभाटा में सन् 1973 में जब पहले परमाणु बिजलीघर का उद्घाटन हुआ था तो आसपास के पिछड़े क्षेत्रों के निवासियों ने इसका खुले दिल से स्वागत किया था। सोचा था कि इसके ज़रिए क्षेत्र के युवकों को रोज़गार के नए अवसर मिलेंगे और यह पिछड़ा क्षेत्र अपनी अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण की दिशा में एक लम्बी छलांग लगा सकेगा। लेकिन न तो रोज़गार सृजन की दिशा में उनकी अपेक्षाएं पूरी हुईं और न ही क्षेत्र के विकास को कोई गति मिली। इसके चलते सन् 1980 में दूसरी इकाई के उद्घाटन के समय उनकी प्रतिक्रिया कुछ कम उत्साहपूर्ण थी।

गौरतलब है कि परमाणु बिजलीघर की प्रथम इकाई का अत्यन्त उत्साह के साथ तथा द्वितीय इकाई का कम उत्साह के साथ ही सही, स्वागत किए जाते वक्त लोगों को इस बात का कोई अनुमान न था कि इन बिजलीघरों से निरन्तर निकलने वाले विकिरण के कारण उन्हें स्वास्थ्य सम्बंधी अनेक नई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। परमाणु बिजलीघरों के अधिकारियों ने इस बारे में उन्हें कभी कुछ नहीं बताया। विकिरण उनको कब, कैसे प्रभावित करेगा, इसकी उन्हें कोई चेतावनी या जानकारी नहीं दी गई। फिर परमाणु बिजलीघरों से निकलने वाले विकिरण का स्वरूप भी तिलस्मी-सा होता है; यह न तो दिखाई देता है, न इसका कोई रूप, रंग या गंध होती है। परमाणु बिजलीघरों द्वारा जब इस बारे में कोई जानकारी ही नहीं दी गई थी तो इस बारे में निकटस्थ ग्रामवासियों को विश्वास में लेने का कोई प्रश्न ही नहीं था।

धीरे-धीरे इन परमाणु बिजलीघरों के पास बसे गांवों के लोगों का स्वास्थ्य सम्बंधी नई समस्याओं से सामना होने लगा। वे महसूस करने लगे कि उनकी स्वास्थ्य सम्बंधी बढ़ती समस्याओं और परमाणु बिजलीघरों में कुछ न कुछ आपसी सम्बंध ज़रूर है।

कुछ लोगों ने इनसे निकलने वाले विकिरण और उससे हो सकने वाली बीमारियों के बारे में पढ़ा था। बिजलीघरों के अधिकारियों से इस बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि इनसे निकलने वाली विकिरण की मात्रा बिल्कुल कम है तथा स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव सम्भव ही नहीं है। लेकिन इन गांववासियों की स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं का ग्राफ तो ऊंचा ही चढ़ता जा रहा था। इस बीच रावतभाटा के कुछ संवेदनशील व्यक्तियों ने विकिरण की बढ़ती समस्याओं से तंग आकर परमाणु विरोधी संघर्ष समिति की स्थापना की और कुछ प्रदर्शन भी आयोजित किए। इस संघर्ष समिति का

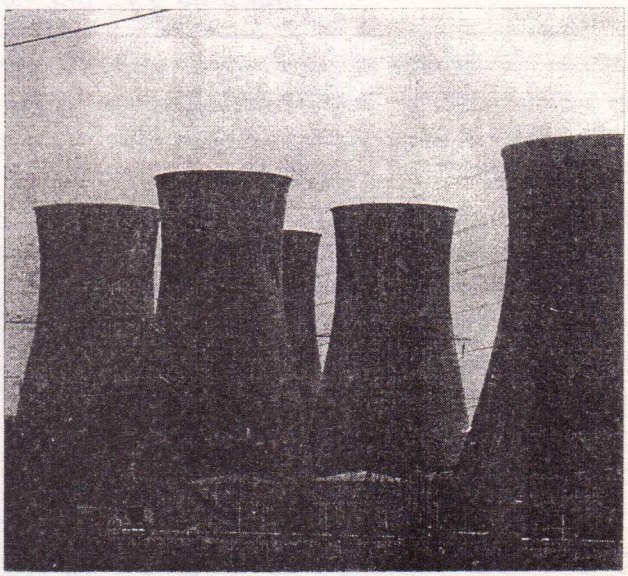

विश्व की ऊर्जा आवश्यकता का केवल तीन प्रतिशत ही परमाणु शक्ति पूरा करती है।